# मनसा सेवा - 70

**अव्यक्त बापदादा :-** (30/03/1998)

➳ _ ➳ दादियों से:- सीजन की समाप्ति निर्विघ्न हुई? बापदादा यही वर्तमान समय देखने चाहते हैं कि जो विशेष निमित आत्मायें हैं, जैसे मुख का आवाज साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुंचता है, ऐसे मन का आवाज संकल्प यह भी ऐसे ही पहुंचे, जैसे यह साइन्स द्वारा मुख का आवाज पहुंचता है। जैसे शुरू में साक्षात्कार होते थे, इशारे मिलते थे, और उसी इशारे से कईयों को जागृति भी आई, ऐसे अभी जो आदि में हुआ वह अन्त में, पहले तो स्थापना थी तो एक ब्रह्मा बाप द्वारा साक्षात्कार हुआ, लेकिन अभी प्रैक्टिकल में शक्तियों का पार्ट है,

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप शिव बाप गुप्त है, बैकबोन है लेकिन स्टेज पर शक्तियों का पार्ट है, तो शक्तियां अनन्य भी बहुत हैं। वह एक ब्रह्मा बाप ने किया, अभी ऐसी मनोबल की शक्ति प्रत्यक्ष हो जैसे मुख का आवाज क्लीयर पहुंचता है ना। ऐसे मन का आवाज धीरे-धीरे पहुंचता जाए, बाप आ गया। सिर्फ यह आवाज भी पहुंच गया तो ढूंढ़ने तो लगेंगे। फिर आपेही पहुंचेंगे। लेकिन यह मनोबल की सेवा अभी होनी चाहिए।

---

➢➢ **मन का आवाज़- संकल्प है**

➳ _ ➳ चाहे कोई कितना दूर बैठा है, मन एक दूसरे से मिले हुए हैं क्योंकि एक सार्वभौमिक मन -Universal Mind है और उसमें छोटे-छोटे मन हैं जो एक दूसरे से कनेक्टेड हैं

→ Thought transferance

- दूसरे के मन में क्या हो रहा वो जाना जा सकता है, समझा जा सकता है, Read किया जा सकता है, हमारे विचार उसके मन में स्थापित किया जा सकता है

➳ _ ➳ हमारी है याद की रिद्धि-सिद्धि

→ **जैसे-जैसे आत्मा सम्पूर्णता के नजदीक आती है उसको पता चल जाता है की भविष्य में क्या होने वाला है, दूसरों के मन में क्या है, क्या भावना है**

- क्योंकि मन इतना सूक्ष्म और स्वच्छ होते जाता है सारी बातें पता चलने लगती हैं

  - सम्पूर्ण सत्य ज्ञान, पवित्रता की शक्ति, योग का बल आ जाये तो ये सारी चीजें सहज प्रकट होने लगती हैं

➳ _ ➳ **Thought Transference पर काम करना है- आत्माओं का आह्वान करना, पुकारना, बात करना है**

→ **बातों में टकराव उत्पन्न होता है, शब्द, शब्द से टकराते हैं, संस्कार, संस्कार से, विचार, विचार से, मत, मत से टकराते हैं**

- जब टकराते हैं तो अग्नि उत्पन्न होती है और दोनों को ही नष्ट करते हैं

  - **Thought Level पर अपने problems को solve करना है**

- ▶ सारा कार्य संकल्प के तल पर ही करना है
- ▶ **जीवन की समस्याएं, सम्बन्ध-संपर्क, सबको ठीक करने का माध्यम संकल्प हैं**

➳ _ ➳ **संसार के लोग ये सब कर सकते हैं तो हम सृष्टि की वह आत्माएं हैं जिनको सम्पूर्ण सृष्टि का ज्ञान है, सम्पूर्ण साइंस, हिस्ट्री, जाग्रफी का ज्ञान है, तो हम मन की शक्ति से क्या नहीं कर सकते हैं**

→ किसी के रोग को ठीक करना

→ मन की पीड़ा ठीक करना

→ अभी हम ये सब नहीं कर पा रहे शायद -

- ■ विधि में गलती हैं, शायद एकाग्रता में कमी है,
- ■ वो योग नहीं है, शायद अशरीरीपन का अभ्यास कम है
- ■ देह का भान ज्यादा पकडे हुए हैं,
- ■ **पैरों में देह भान की कड़ियाँ हैं, जंजीरें बंधी हुई हैं**

- ▶ **अगर ये जंजीरें टूट जाये तो क्या नहीं हो सकता है- मन से ऐसी अद्भुत शक्तियां प्रकट हो सकती हैं, उसकी क्षमता बहुत ज्यादा है**
- ▶ **अवचेतन मन में अनंत शक्तियां भरी हुई हैं**
- ▶ मन की आवाज संकल्प है
- ▶ **बिना कुछ बोले किसी आत्मा तक संकल्प, भाव, भावना, थॉट, प्रेरणा पहुंचाई जा सकती है**
- ▶ विचार को भी एक मन से दूसरे मन में स्थापित किया जा सकता है
- ▶ **महान कार्य संकल्प से चालू होते हैं**
- ▶ **जो व्यक्ति संकल्प कर ले मुझे करना है वह कुछ भी कर सकता है**
- ▶ संकल्प बीज है उसको स्मृति का पानी और योग की धूप चाहिए
- ▶ जो संकल्प किए उसीके बारे में स्वप्न देखना, रग-रग में, नस-नस में, रूँआ-रूँआ वही संकल्प समा जाए
- ▶ **इन सभी शक्तियों को प्रकट करने के लिए बार-बार अशरीरीपन की ड्रिल करनी है**
- ▶ **बाबा ने कहा है- 'सूर्य को सारे जगत को प्रकाशित करना होता है तो वो ऊपर होता है', यदि सारे विश्व को सकाश देनी है तो इस विश्व से ऊपर होना पड़ेगा, इस देह के भान से ऊपर होना पड़ेगा, देह के आकर्षण से ऊपर होना पड़ेगा**
- ▶ **जिसके संकल्प इस संसार की गतिविधियों से बाहर है और जितना बाहर है, जो इस संसार से परे रहता है वो इस जगत की उतनी अधिक सेवा कर सकता है**

- जिसके संकल्प इसी जगत में है- कैसे प्रसिद्धी प्राप्त हो, कैसे नाम हो वो स्वार्थ वाली हैं

- **हम ज्ञान सूर्य बन जाएँ तो हमसे जो प्रकाश निकलेगा वह जो सकाश इससे अज्ञान तिमिर नष्ट होगा**

---